# उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

* वीरेन्द्र कुमार रत्नाकर

**प्रस्तावनाः—**

भारत एक विशाल देश है। यह एशिया महाद्वीप का एक महत्वपूर्ण उपमहाद्वीप भी है। हमारे देश की ऐतिहासिकता अति प्राचीन है। हमारे देश का चार हजार वर्षो से भी अधिक का गौरवशाली सांस्कृतिक इतिहास है। अनेकता में एकता हमारी मौलिक विशेषता रही है। सांस्कृतिक विविधताओं के कारण भारत का संसार भर में विशिष्ट स्थान रहा है। हमारे देश में विभिन्न जातियों, धर्मो एवं सम्प्रदायों के लोग निवास करते हैं। भारत की इसी विविधता ने यहाँ एक सहिष्णु एवं आत्मसात करने वाली महान संस्कृति को विकसित किया है।

जातीय विभिन्नता भारतीय संस्कृति की सारभूत एकता है। भारत बहुभाषी लोगों का देश है। प्राचीन भारत में पालि, प्राकृत, मागधी, शूरसेनी, संस्कृत तथा द्रविड़ (तमिल, तेलगू, कन्नड, मलयालम) आदि भाषाओं का विकास हुआ। वैदिककाल में आर्यो की भाषा संस्कृत थी। विभिन्न आक्रान्ताओं के भारत में आगमन से मध्यकालीन भारत में अरबी, तुर्की एवं फारसी भाषा का प्रचलन हुआ। इन भाषाओं के साथ भारत मे विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं (सिन्धी, पंजाबी, बुन्देलखण्डी, हरियाणवी, बंगाली, मैथिली, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, आसामी एवं उड़िया) आदि का भी पर्याप्त विकास हुआ। चौधरी, (1983), ने ''कल्चरल वैरिएबल इन कन्जरवेशन ट्रेनिंग बाई सेल्फ ट्रान्सफारमेशन एण्ड स्क्रीनिंग इन टू कल्चर्स'' विशय पर अध्ययन किया। पाण्डे, (1989) ने ''ए स्टडी आन द सरस्वती विद्या मंदिर विद रेफरेंस टू द स्टूडेन्ट्स एकेडमिक एचीवमेंट एंड साइको सोशल डेवलपमेंट'' विषय पर अध्ययन किया। **चतुर्वेदी,** (2001) ने ''पर्सनाल्टी पैटर्न,

* शोधछात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

मौरल वैल्यूज एण्ड नेशनल अवेकनिग अमन्ग स्टूडेन्ट्स इन स्कूल ऑफ डिफरेंट कल्चरल एसोसिएशन'' विषय पर अध्ययन किया। श्रीवास्तव, आस्थाना (2002) ने ''अंग्रेजी माध्यम व हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले किशोरों के आत्म प्रत्यय एवं मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। उपरोक्त अध्ययनों से यह निश्कर्ष पाया गया कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों में, अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक सांस्कृतिक ज्ञान रखते हैं।

**अध्ययन की आवश्यकताः–**

आज माता–पिता यह चाहते है कि हमारा बच्चा संस्कारी हो, सद्गुणी हो, अपनी संस्कृति का सम्मान करे तथा संस्कृति एवं मूल्यों की रक्षा करे लेकिन वर्तमान स्थिति बिल्कुल विपरीत है। बालक शायद स्वयं को ऐसे परिवेश में ढाल नहीं पा रहे है और वे अपनी संस्कृति को स्वीकार नहीं करते क्योकि आजकल हमारी शिक्षा पाश्चात्य संस्कृति का सूचक बनती जा रही है। कहीं इसका कारण शिक्षण संस्थाओं में प्रचलित शिक्षा का माध्यम तो नहीं? भारतीय संस्कृति के समान्तर ही एक और संस्कृति का विस्तार हमारे देश में तीव्रता से हो रहा है। जिसकी झलक हमारे आज के नवयुवकों एवं युवतियों पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। भारत में रहकर यह नवयुवक हमारी संस्कृति को वे महत्व एवं सम्मान नही दे पा रहा है जो उसे भारत देश का नागरिक होकर देना चाहिए।

**समस्या कथनः–**

उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन''

**अध्ययन के उद्देश्यः–**

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पनाएं:–**

**प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–**

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**अध्ययन की परिसीमाएं :–**

प्रस्तुत शोध की परिसीमाएं निम्नलिखित हैं–

1. प्रस्तुत शोध में इलाहाबाद के केवल 6 विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के तीन वर्गो (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में भारतीय संस्कृति ज्ञान के परीक्षण के लिए केवल 100 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया।

**अनुसंधान विधिः–**

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

**अध्ययन की जनसंख्याः–**

प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को लिया गया है। यू0पी0 बोर्ड, सी0बी0एस0ई0 तथा आई0सी0एस0ई0 विद्यालयों में अध्ययनरत् इनमें तीन वर्गो (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के छात्र–छात्रायें सम्मिलित किये गये है। 100 छात्र–छात्राओं को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

**न्यादर्श विधि :–**

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक (Randam) न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

**अध्ययन का न्यादर्श :–**

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने चयनित विद्यालय के विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा 100 छात्र–छात्राओं को चुना।

**अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणः–**

उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन के लिए ' भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षण प्रश्नावली' का उपयोग किया गया है।

**प्रयुक्त सांख्यिकी विधियां :**

आकड़ों के विश्लेषण के लिए **मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता और क्रान्तिक अनुपात** का प्रयोग किया गया है।

**आँकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्याः–**

$\mathbf{H_1}$ – उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के

विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नही है।

**परिणाम**– आँकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त प्राप्त परिणाम से हम कह सकते हैं कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के में भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

$\mathbf{H_2}$ – उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**परिणाम** :– आँकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त प्राप्त परिणाम से हम कह सकते हैं कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों में भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

$\mathbf{H_3}$ – उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**परिणाम** :– आँकड़ों के विश्लेशण के उपरान्त प्राप्त परिणाम से कह सकते है कि हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

**निष्कर्ष** :

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षण के आधार पर निम्नलिखित निश्कर्ष प्राप्त हुए :–

1. हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों का भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक है।
2. हिन्दी माध्यम के छात्रों का भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों से अधिक है।

3. हिन्दी माध्यम की छात्राओं का भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्राओं की तुलना में अधिक है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–**


1. गुप्ता, न.ला.(2000), ''मूल्य परक शिक्षा'',अजमेरः कृष्णा ब्रदर्स प्रकाशन, पृ.क्र. 31–22.
2. टिकरिहा, सं. (1993), ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में मानवीय मूल्यों के प्रतिस्थापन हेतु किये जा रहे प्रयासों का समीक्षात्मक अध्ययन'', लघु शोध प्रबन्ध, पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर।
3. बत्रा, दी.ना. (1991), ''शिक्षा का भारतीय करण,'' लखनऊः विद्याभारती प्रकाशन, पृ.क्र. 11–15.
4. भारत सरकार, (1985), ''शिक्षा की चुनौती''. दिल्लीः शिक्षा मंत्रालय, पृ.क्र. 10.
5. भारत सरकार, (1986), ''राश्ट्रीय शिक्षा नीति,'' नई दिल्ली : मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) मई, पृ.क्र. 1–10.
6. एण्डरसन, ए.एल.(1966), ''पर्सनल एण्ड सिचुएशनल फैक्टर्स अफेक्टिंग द च्वाइस बेटवीन कॉलेज एण्ड सेकेण्डरी टीचर्स ऑफ डिफरेन्ट सब्जेक्ट एरियाज,'' जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. 60 (2)